चन्द्रगुप्त का प्रारंभिक जीवन :- चन्द्रगुप्त के प्रारंभिक जीवन के विषय में विश्वसनीय जानकारी बहुत कम उपलब्ध है। ब्राह्मण ग्रन्थ उसे शूद्र बतलाते हैं जबकि बौद्ध ग्रन्थ में चन्द्रगुप्त को मौरिय जाति के राजा का पुत्र अथवा क्षत्रिय बतलाया गया है। चन्द्रगुप्त मौर्य के माता-पिता का नाम बिल्कुल ज्ञात नहीं है। महावंशटीका से यह पता चलता है कि उसका पिता मौरिय जाति का प्रधान था। और वह किसी संघर्ष में मारा गया था। इसके बाद उसकी माता अज्ञात रूप से पाटलिपुत्र में निवास करने लगी। संभवतः 345 ई.पू. में चन्द्रगुप्त का जन्म यहीं हुआ। चन्द्रगुप्त का लालन-पालन पहले एक ग्वाले ने और बाद में एक शिकारी ने किया। इस प्रकार उसका बचपन मयूर-पालकों, शिकारियों और चरवाहों के बीच व्यतीत हुआ।

Scanned with CamScanner

चन्द्रगुप्त प्रारंभ से ही बड़ा शक्ति शाली बालक था। वह एक दिन राजकीय खेल खेल रहा था इस खेल में वह राजा बना और अपने साथियों को उसने दूसरे पद दिए तथा उनकी सहायता से कुछ अभियुक्तों का न्याय करने लगा। उसी समय दूरस्थ चाणक्य यह सारा खेल देख रहा था। वह चन्द्रगुप्त की प्रतिभा से प्रभावित होकर उसे शिकारी से एक हजार रुपये में खरीद लिया। वह चन्द्रगुप्त को तक्षशिला ले गया और वहाँ उसे शिक्षा दी।

चन्द्रगुप्त अपने गुरु एवं मंत्री विष्णुगुप्त, जिसे इतिहास में चाणक्य के नाम से जाना जाता है की सहायता से भारत को यूनानी शक्तियों से मुक्त कराया और मगध के नंदवंशीय राजा धनानंद को सिंहासन से पदच्युत कर मगध राज्य पर अपना अधिकार स्थापित किया चाणक्य ने 322 ई॰पू॰ में उसका राज्याभिषेक किया।